|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 06. Juni 2022 | | |
| **Pfingstmontag C** | | |
| Erste Lesung: Apg 19,1b-6a; Zweite Lesung: Röm 8,14-17; Evangelium: Joh 3,16-21 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 348, 1+4+5 | Nun bitten wir den Heiligen Geist |
|  | GL 347, 1+3+4 | Der Geist des Herrn |
|  | GL 351, 1+3+4+6 | Komm, Schöpfer Geist |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 156 | Kyrie eleison |
|  | GL 165 | Send uns deines Geistes Kraft |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 171 | Preis und Ehre |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 145, 2-5.8-11.15-16 |  |
|  | Kehrvers: GL 401 | Lobet den Herrn |
|  | oder |  |
|  | GL 346, 1-3 | Atme in uns, Heiliger Geist |
|  | GL 619, 1+2 | Alles, was Odem hat |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Wer mich liebt, hält fest an meinem Wort.* | |
|  | *Mein Vater wird ihn lieben, und wir werden bei ihm wohnen.* | |
|  |  |  |
| Fürbitt-Ruf: | GL 645, 3 | Sende aus deinen Geist |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 764, 1+2+5 | Send deinen Geist |
|  | GL 767, 1-4 | Dein Geist weht, wo er will |
|  | GL 710 | Unser Leben sei ein fest |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 194 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 208 | Christe, du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 468 | Gott gab uns Atem |
|  | GL 456, 2+4! | Jesus, unser Bruder |
|  | GL 453, 1-4! | Bewahre uns Gott |
|  | GL 766, 1-3 | Komm, Heilger Geist |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 389, 1-3! | Dass du mich einstimmen lässt |
|  | GL 395, 1-3 | Den Herren will ich loben |
|  | GL 347 | Der Geist des Herrn |